राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र

हलधर किसान

शुभ दीपावली

डाक पंजी. क्र.- MP/KDW/93/2023-24

Email id: haldharkisankgn@gmail.com

RNI NO. MPHIN/2022/85285

वर्ष 03 अंक 09 | 1 नवंबर से 30 नवंबर 2024 | पृष्ठ- 8 मूल्य- 5.00 रुपए

स्पेन में बाढ़ से बिगड़े हालात, राजा और रानी पर आक्रोषित लोगों ने उछाला कीचड़

हलधर किसान

नई दिल्ली। स्पेन इन दिनों दशकों बाद सबसे भीषण बाढ़ से जूझ रहा है। अब तक 217 लोगों की जान जाने और हजारों लोगों के लापता होने की जानकारी मिल रही है। नतीजतन बाढ़ प्रभावित लोगों का सरकार पर गुस्सा भी फूटने लगा है। स्पेन के राजा फेलिप और रानी लेटिजिया बाढ़ प्रभावित पैपोर्टा शहर का दौरा करने पहुंचे। तहां उन्हें लोगों के गुस्से का सामना करना पड़ा। लोगों ने राजा और रानी पर कीचड़ फेंका।

गाली.गलौच और जमकर नारेबाजी की।

हालांकि इस दौरान राजा और रानी ने लोगों से मुलाकात की और सांत्वना दी। राजा और रानी के चेहरे पर कीचड़ लगा था। बावजूद इसके राजा ने कई लोगों को गले भी लगाया।

पीएम की गाड़ी पर पत्थर से हमला

राजा और रानी के साथ स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज व वैलेंसियन संसद के प्रमुख कार्लोस माजोन भी पहुंचे थे। मगर भीड़ का गुस्सा शांत नहीं हुआ। इसके बाद वहां से पीएम को सुरक्षित बाहर निकाला गया। स्पेनिश मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक पीएम सांचेज पर कई चीजों से हमला किया गया। बीबीसी के मुताबिक पीएम सांचेज की गाड़ी पर पत्थरों से भी हमला किया गया है।

क्या है नाराजगी का कारण?

अधिकारियों की तरफसे बाढ़ की चेतावनी के बावजूद पर्याप्त सहायता न देने की वजह से लोग खफा है। उधर, बाढ़ से मची तबाही के बीच राहत एवं बचाव कार्य जारी है। आपातकालीन कर्मचारी लोगों को बचाने में जुटे हैं। भूमिगत पार्किंग और सुरंगों में लोगों की लाश खोजी जा रही हैं।

बिजली और पानी की समस्या

स्पेन के प्रधानमंत्री सांचेज ने 10 हजार से अधिक सैनिकों को बाढ़ प्रभावित स्थानों पर भेजने का आदेश दिया है। उन्होंने सरकार की कमी को स्वीकार भी किया। मंगलवार को भारी बारिश के बाद बाढ़ ने कई कस्बों पर भारी तबाही मचाई। यहां कीचड़ के ढेर लगे हैं। लोग अपने घरों से कीचड़ और मिट्टी हटाने में जुटे हैं।

अमेरिका ने झींगा निर्यात पर लगाया 5.75 सीवीडी, भारत के व्यापार पर पड़ेगा असर?

हलधर किसान

नई दिल्ली। अमेरिकी वाणिज्य विभाग (Doc) ने भारत को बड़ा झटका दिया है। विभाग की तरफसे जमे हुए पानी के झींगे पर अधिक प्रतिपूर्ति शुल्क (cvd) लगा दिया है। भारत के मुकाबले इक्वाडोर, इंडोनेशिया और वियतनाम पर कम प्रतिपूर्ति शुल्क लगाया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसका असर अमेरिका को भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात पर पड़ सकता है। इसके अलावा प्रतिस्पर्धी देशों को भारत के मुकाबले निर्यात में बढ़त मिल सकती है।

रिसर्च हाउस इनक्रेड इक्विटीज ने कहा कि इस निर्णय से भारतीय झींगा निर्यात करने वाली कंपनियों पर असर पड़ने की संभावना है। ऐसा इसलिए क्योंकि अंतिम प्रतिपूर्ति शुल्क 5.7 प्रतिशत की सीमा में हो सकता है, जबकि इक्वाडोर के लिए यह 3.75 प्रतिशत, इंडोनेशिया और वियतनाम के लिए 2.84 प्रतिशत है। डीओसी के निष्कर्ष इस जांच पर आधारित हैं कि क्या इन देशों और उनकी कंपनियों को सब्सिडी मिली है जिससे उन्हें अमेरिकी बाजार में अनुचित लाभ मिला।

अमेरिका ने भारत के जमे हुए (फ्रोजन) झींगा किसानों को बड़ा झटका दिया है। हालांकि अमेरिका इसकी ताक में बीते एक साल से लगा हुआ था। 10 अक्टूबर 2023 में भी इस तरह की खबरें सामने आई थी कि अमेरिका एंटी डंपिंग या इसी तरह की दूसरी ड्यूटी लगा सकता है। लेकिन अब मौका मिला तो फौरन ही झींगा पर काउंटरवेलिंग ड्यूटी लगा दी है। 5.75 फीसद सीवीडी लगाई गई है। झींगा एक्सपर्ट और झींगा उत्पादक किसान डॉ. मनोज शर्मा का कहना है कि हालांकि झींगा एक्सपोर्ट करने में पूरी एक चेन काम करती है। प्रोसेसिंग यूनिट भी इसमे शामिल है, लेकिन अमेरिका के इस कदम की मार घुमा.फिराकर झींगा उत्पादक किसान पर ही पड़नी है।

भारत में तो उसकी जेब ही काटी जाएगी। जबकि पहले से ही झींगा किसान सही दाम ना मिलने से परेशानी में है। ऊपर से ये एक और परेशानी आ गई। हालांकि अमेरिका ने इक्वाडोर, इंडोनेशिया और वियतनाम पर एंटी डंपिंग ड्यूटी लगाई है। अब इसके चलते एक बार फिर इंटरनेशनल मार्केट में रेट को लेकर मारामारी शुरू हो जाएगी।

सबसे ज्यादा भारत पर लगाई गई ड्यूटी

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका के वाणिज्य विभाग ने भारत से अमेरिका को एक्सपोर्ट होने वाले फ्रोजन झींगा पर दूसरे देशों के मुकाबले सबसे ज्यादा ड्यूटी लगाई है। हालांकि दूसरे देशों पर एंटी डंपिंग ड्यूटी लगाई है तो भारत पर सीवीडी लगाई है। रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका ने इक्वाडोर पर 3.75 फीसद एंटी डंपिंग ड्यूटी तो इंडोनेशिया पर 2. 84 फीसद और वियतनाम पर 1.3 फीसद एंटी.डंपिंग ड्यूटी लगाई गई है। वहीं भारत पर 5.75 फीसद सीवीडी लगाई गई है। गौरतलब रहे भारत और इक्वाडोर झींगा एक्सपोर्ट करने वाले दो बड़े देश हैं।

अमेरिका को 300 करोड़ का एक्सपोर्ट होता है झींगा

एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका को सबसे ज्यादा भारत और इक्वाडोर झींगा एक्सपोर्ट करते हैं। भारत से अमेरिका को 2.9 बिलियन डॉलर (300 करोड़ डॉलर) का झींगा एक्सपोर्ट होता है। बीते कुछ वक्त से अमेरिका में भारतीय झींगा के दाम भी कम हो गए हैं। साल 2021.22 में एक किलो भारतीय झींगा की कीमत 8.57 डॉलर थी, जो अब घटकर 7.4 डॉलर प्रति किलोग्राम रह गई है।

झींगा किसान डॉ. मनोज शर्मा ने किसान तक को बताया कि एंटी डंपिंग और काउंटर वेलिंग ड्यूटी अपने देश के किसान या व्यापारियों को नुकसान से बचाने के लिए लगाई जाती है। जबकि अमेरिका में झींगा होता नहीं है। काउंटर वेलिंग ड्यूटी तब लगाई जाती है जब इंपोर्ट करने वाले देश को ये पता हो कि बेचने वाले के देश में सरकार इस प्रोडक्ट पर सब्सिबडी या दूसरी तरह की राहत दे रही है। जबकि हमारे देश के झींगा किसानों को किसी भी तरह की सब्सिडी नहीं मिल रही है। झींगा एक्सपोर्ट में जो दूसरे लोग जुड़े हुए हैं उन्हें सरकार से झींगा के नाम पर स्कीमों का फायदा मिल रहा है।

भारत और इक्वाडोर से अमेरिका को झींगा की अच्छी खासी सप्लाई हो रही है, इसी का वो फायदा उठाकर बेवजह की ड्यूटी लगा रहा है, क्योंकि हमारे देश में 10 लाख टन से ज्यादा झींगा का उत्पादन होता है। हम सात से आठ लाख टन एक्सपोर्ट करते हैं। झींगा पूरी तरह से एक्सपोर्ट पर निर्भर है। इससे बचने के लिए हमे देश में आज नहीं तो कल झींगा का घरेलू बाजार तैयार करना ही होगा।

निर्यातकों ने क्या कहा?

सीफूड एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन कुमार ने बताया कि इसका प्रभाव गंभीर होगा क्योंकि भारत का अमेरिका को झींगा निर्यात 2.9 बिलियन डॉलर था और देश का 40 प्रतिशत समुद्री खाद्य निर्यात अमेरिका जाता है। सीवीडी लगाने के फैसले से किसान और निर्यातक दोनों प्रभावित होंगे और कच्चे माल की कीमतें बढ़ने की संभावना है, जिससे भारतीय झींगा उत्पाद अन्य प्रतिस्पर्धी देशों के मुकाबले कम प्रतिस्पर्धी हो जाएंगे।

5.7 प्रतिशत सीवीडी के अलावा, भारतीय उत्पादों पर 1.3 प्रतिशत अतिरिक्त एंटी.डंपिंग शुल्क है और इस बात की भी संभावना है कि एंटी.डंपिंग शुल्क और बढ़ सकता है। उन्होंने कहा, अगर ऐसा होता है, तो अमेरिकी बाजारों में भारतीय झींगा सबसे महंगा हो जाएगा।

अमेरिकी अधिकारियों द्वारा सब्सिडी प्राप्त करने के निष्कर्षों पर, पवन कुमार ने कहा कि भारत सरकार कोई सब्सिडी नहीं दे रही है, बल्कि वे डब्ल्यूटीओ अनुपालन और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार निर्यात उत्पादों पर करों और शुल्कों की छूट जैसी योजनाओं के तहत शिपमेंट के लिए लगाए गए सभी करों की प्रतिपूर्ति कर रहे हैं।

उन्होंने भारत के झींगा शिपमेंट पर किसी भी तरह के और प्रभाव से बचने के लिए अमेरिका में भारत के मामले को मजबूती से लड़ने के लिए सरकार और वाणिज्य मंत्रालय से तत्काल हस्तक्षेप करने की भी मांग की।

वन स्टॉप सेंटर के रूप में कार्य करेंगे पीएम किसान समृद्धि केन्द्र : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

हलधर किसान भोपाल (खाद, बीज)।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पीएम किसान समृद्धि केन्द्र वन स्टॉप सेंटर के रूप में कार्य करेंगे। इनमें खाद, बीज, कृषि उपकरण और मिट्टी परीक्षण के अतिरिक्त खेती.किसानी से संबंधित अन्य जानकारियाँ भी उपलब्ध कराई जायेंगी। उल्लेखनीय है कि 3 सितम्बर को मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सहकारिता विभाग और नर्मदा नियंत्रण मण्डल के कार्यों की समीक्षा बैठक में प्रत्येक ग्राम पंचायत में पीएम किसान समृद्धि केन्द्र स्थापित किये जाने के निर्देश दिये थे।

पीएम किसान समृद्धि केन्द्रों का उद्देश्य है कि एक ही स्थान पर किसानों को मिट्टी, बीज, उर्वरक इत्यादि की जानकारी उपलब्ध कराई जाये। इसके साथ ही इन केन्द्रों को कस्टम हॉयरिंग सेंटर्स से जोड़कर किसानों को कृषि संबंधी छोटे और बड़े उपकरण भी उपलब्ध कराये जायें। किसानों को कृषि की बेहतर पद्धतियों और विभिन्न शासकीय योजनाओं के बारे में जानकारियाँ प्रदान की जायें।

किसानों को मिलेंगे ये लाभ

ग्राम पंचायतों में पीएम किसान समृद्धि केन्द्र स्थापित हो जाने से किसानों को अन्य स्थानों पर नहीं जाना पड़ेगा। उन्हें केन्द्र में ही खेती.किसानी के लिये आवश्यक सभी संसाधन उपलब्ध होंगे। संसाधन उपलब्ध न होने पर किसान समृद्धि केन्द्र समन्वयक की भूमिका निभाकर उन्हें संसाधन उपलब्ध करायेगा। इससे किसानों का खादए बीजए उर्वरक और कृषि उपकरणों की खरीदी के लिये आने.जाने का समय भी बचेगा और अन्य व्यय भी नहीं होंगे। उन्हें किसान समृद्धि केन्द्र पर ही गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध होगीए जिससे वे बेहतर उपज भी प्राप्त कर सकेंगे।

एक ही स्थान पर मिलेगी खाद, बीज, मिट्टी और कृषि उपकरणों की जानकारी

किसान समृद्धि केन्द्र पर रहेगी हेल्प.डेस्क

पीएम किसान समृद्धि केन्द्र पर हेल्प.डेस्क भी रहेगी। यहाँ से मृदा विश्लेषण और मृदा परीक्षण के आधार पर पोषक तत्वों के उपयोग की जानकारी मिलेगी। मौसम पूर्वानुमान की जानकारी मिलेगी। केन्द्र से फसल बीमा, ड्रोन, कृषि वस्तुओं की जानकारी के साथ अधिक लाभार्जन के लिये फसलों के पेटर्न के पैकेज संबंधी जानकारी भी मिलेगी।

प्रगतिशील किसानों का रहेगा व्हाट्सएप ग्रुप

पीएम किसान समृद्धि केन्द्र के संचालक कृषि विभाग और कृषि संबंधी कार्यक्रम और गतिविधियों से जुड़े रहेंगे। पीएम किसान समृद्धि केन्द्र से जुड़े प्रगतिशील किसानों के किसान समृद्धि समूह नामक व्हाट्स.अप ग्रुप का निर्माण भी किया जायेगा।

5 साल में तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक बना भारत कृषि उत्पादों के निर्यात में भारी बढ़ोत्तरी

हलधर किसान। निर्यात के मामले में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। खासतौर पर कृषि उत्पादों का निर्यात जोर पकड़ रहा है। पिछले पांच साल में भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक बन गया है। 2018 से 2023 के दौरान पेट्रोलियम निर्यात में दोगुना तेजी दर्ज की गई है।

इन उत्पादों के निर्यात में इजाफा

गत्रा में देश का निर्यात 2018 में 0.93 अरब डॉलर से चार गुना बढ़कर 2023 में 3.72 अरब डॉलर हो गया है। इससे भारत की वैश्विक बाजार हिस्सेदारी 2018 में 4.17 प्रतिशत से बढ़कर 2023 में 12.21 प्रतिशत हो गई है।

कीटनाशकों के मामले में देश की वैश्विक हिस्सेदारी 2018 में 8.52 प्रतिशत से बढ़कर 2023 में 10.85 प्रतिशत हो गई। इसका निर्यात 4.32 अरब डॉलर तक पहुंच गया।

सेमीकंडक्टर और फोटोसेंसिटिव उपकरणों का निर्यात 2018 में मात्र 0.16 अरब डॉलर से बढ़कर 2023 में 1.91 अरब डॉलर हो गया है। विश्व बाजार में देश अब नौवें स्थान पर है। 2018 में 25वें स्थान पर रहा था। 2023 में पेट्रोलियम निर्यात बढ़कर 84.96 अरब डॉलर हो गया है। यानी 2018 में 6.45 प्रतिशत से बढ़कर 2023 में 12.59 प्रतिशत हो गया। इससे दूसरे सबसे बड़े वैश्विक निर्यातक के रूप में भारत उभरा है। 2018 में यह पांचवें स्थान पर था।

कीमती और अर्ध.कीमती पत्थरों के क्षेत्र में देश की हिस्सेदारी 2018 में 16.27 प्रतिशत से बढ़कर 2023 में 36.53 प्रतिशत हो गई। यानी कुल निर्यात 1.52 अरब डॉलर का रहा है।

तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक बन गया भारत

एक सरकारी अधिकारी ने कहा, अंतरराष्ट्रीय कृषि और पर्यावरण मानकों को पूरा करने की हमारी क्षमता और कृषि रसायनों में नवाचार पर जोर देने के कारण यह सुधार हुआ है। आंकड़ों से पता चलता है कि 2018 में 5वें स्थान के मुकाबले भारत अब विश्व स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा निर्यातक है। इसमें लगातार इजाफा हो रहा है।

नेक, सच्चे और सरल व्यक्तित्व थे देश के रत्न, रतन टाटा

देश के प्रसिद्ध और जाने माने उद्योगपति और समाजसेवी रतन टाटा अब हमारे बीच नही रहे। उन्होंने 86 वर्ष की आयु में 9 अक्टूबर को मुंबई के ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में अपनी आखरी सांस ली। यह खबर आते ही पूरे देश में शोक की लहर दौड़ पड़ी। हर किसी की आंखें नम थीं। रतना टाटा देश के रत्न थे। उन्होंने अपने काम के अलावा, पूरी जिंदगी दूसरों के बारे में सोचा। हर आपदा में वे आगे बढ़कर मदद किया करते थे। बेहद ही नेक, सच्चे और सरल व्यक्तित्व के थे बिजनेसमैन स्वर्गीय रतन टाटा. उन्हें शायद ही कभी भुलाया जा सकेगा। उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी।

रतन टाटा ने अपने व्यक्तित्व के कारण लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई। देश भर में उनके चाहने वालों की कोई कमी नहीं है। लोग उन्हें अपने.अपने तरीके से श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

देश की जानी मानी हस्ती रतन टाटा को भारत के दो सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण (2000) और पद्म विभूषण (2008) से भी सम्मानित किए जा चुका है। रतन टाटा का जन्म ब्रिटिश राज के दौरान बॉम्बे (अब मुंबई) में 28 दिसंबर 1937 को एक पारसी परिवार में हुआ था। वे नवल टाटा के पुत्र थे, जो सूरत में पैदा हुए थे। उनके माता.पिता का नाम नवल टाटा और सूनी कमिसारीट था। जब रतन टाटा 10 साल के थे, तब वे अपने माता-पिता से अलग हो गए थे। उसके बाद उन्हें जेएन पेटिट पारसी अनाथालय के माध्यम से उनकी दादी नवाजबाई टाटा ने औपचारिक रूप से गोद ले लिया था। रतन टाटा का पालन.पोषण उनके सौतेले भाई नोएल टाटा (नवल टाटा और सिमोन टाटा के बेटे) के साथ हुआ।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

रतन टाटा ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मुंबई के कैंपियन स्कूल से की। यहां से उन्होंने 8वीं तक की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद, आगे की पढ़ाई के लिए वे मुंबई में कैथेड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल और शिमला में बिशप कॉटन स्कूल गए। इसके बाद रिवरडेल कंट्री स्कूल, न्यूयॉर्क शहर में शिक्षा प्राप्त की है। वे कॉर्नेल विश्वविद्यालय और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के पूर्व छात्र हैं।

1991 में रतन टाटा ने टाटा संस और टाटा ग्रुप का अध्यक्ष पद संभाला। उन्होंने 21 वर्षों तक टाटा समूह का नेतृत्व किया और इसे बुलंदियों पर पहुंचाया। उनके नेतृत्व में टेटली टी, जगुआर लैंड रोवर और कोरस का अधिग्रहण किया गया। उनकी देखरेख में टाटा ग्रुप 100 से अधिक देशों में फैल गया। टाटा नैनो कार भी रतन टाटा की ही अवधारणा थी। रतन टाटा ने 2011 में एक कार्यक्रम के दौरान कहा था कि मैं चार बार शादी करने के करीब पहुंचा, लेकिन हर बार डर के कारण या किसी न किसी कारण से मैं पीछे हट गया। एक रिपोर्ट के मुताबिक, लॉस एंजिल्स में काम करते समय उन्हें एक लड़की से प्यार हो गया था और उन्हें भारत लौटना पड़ा क्योंकि उनके परिवार का कोई सदस्य बीमार था। लड़की के माता.पिता ने उसे भारत जाने की अनुमति नहीं दी। कहा जाता है शायद वह इसी कारण आज तक अविवाहित रहे। द्योगपति रतन टाटा ने टाटा ग्रुप के जरिए कई साल देश की सेवा की रतन टाटा ने न सिर्फटाटा ग्रुप के कारोबार को बढ़ाया। बल्कि उन्होंने मानवता के लिए भी खूब काम किए। समय.समय पर जरूरतमंदों को खूब पैसे भी दान किए। करोना काल में टाटा समूह ने 1500 करोड़ रुपए का दान दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रतन टाटा ने अपनी कमाई का 60.70 फीसदी हिस्सा दान किया है और यही वजह है कि देशवासी रतन टाटा को भारत रत्न देने की मांग करते रहे हैं। भारत में अब तक सिर्फ एक उद्योगपति को भारत रत्न दिया गया है वह भी रतन टाटा के परिवार से हैं। साल 1992 में जहांगीर रतन जी दादाभाई टाटा यानी जेआरडी टाटा को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। रतन टाटा को मिल चुके है कई सम्मान- साल 2000 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया, 2004 में रिपब्लिक ऑफऊरुगुवे लंदन स्कूल ऑफइकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस ने मेडल ऑफ द ओरिएंटल दिया, 2008 में भारत सरकार ने पद्म विभूषण से नवाजा, 2008 में ही यूनिवर्सिटी ऑफकैंब्रिज ने ओनरी डॉक्टर ऑफ लॉ की डिग्री दी, 2008 में आईआईटी बॉम्बे ने ओनरी डॉक्टर ऑफसाइंस की उपाधि दी। 2008 में आईआईटी खरगपुर ओनरी डॉक्टर ऑफ साइंस, 2008 में सिंगापुर सरकार ने ओनरी सिटिजन अवॉर्ड दिया, 2016 में फ्रांस सरकार ने कमांडर ऑफद लीजन ऑफ द ओनर से सम्मानित किया, 2023 में किंग चार्ल्स ने ओनरी ऑफिसर ऑफद ऑर्डर ऑफऑस्ट्रेलिया से सम्मानित किया, 2023 में महाराष्ट्र सरकार ने उद्योग रत्न से सम्मानित किया।

संपादकीय

12 नवंबर को देवउठनी एकादशी

16 से शुरु होंगे विवाह मुहुर्त, नवंबर- दिसंबर में विवाह के 20 मुहुर्त, बैंड- बाजा, मैरेज गार्डन, कैटरिंग, पंडितों की बुकिंग

हलधर किसान

ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप जैन (सोनी)

अजमेर।

देवउठनी एकादशी 12 नवंबर को है। इस दिन से विवाह की शहनाइयां बजना शुरू हो जाएंगी। लेकिन, मुहूर्त शुरू होने के लिए लोगों को 16 नवंबर को सूर्य के तुला से वृश्चिक राशि में पहुंचने का इंतजार करना होगा।

ज्योतिषाचार्य डॉ. सुदीप जैन (सोनी) ने बताया कि साल के अनुसार इस साल अंतिम दो माह में 20 दिन विवाह मुहूर्त रहेंगे। नवंबर में 9 और दिसंबर में 11 दिन मुहूर्त हैं। इसके चलते शहर के मैरिज गार्डन की लगभग बुकिंग हो चुकी है। अगले साल 2025 में जुलाई से अक्टूबर तक विवाह मुहूर्त नहीं रहेंगे। आगामी साल जनवरी में विवाह मकर संक्रांति के बाद 15 जनवरी से फिर लगनसरा शुरू होंगे। आगामी वर्ष 2025 में जनवरी से जून तक विवाह मुहूर्त रहेंगे, परंतु जुलाई से अक्टूबर तक 4 माह विवाह नहीं होंगे। इसकी वजह यह है कि 10 जुलाई तक गुरु ग्रह अस्त रहेंगे। इसके बाद श्रावण मास शुरू होने पर चातुर्मास भी प्रारंभ हो जाएगा।

ज्योतिषाचार्य सोनी के मुताबिक 17 जुलाई को देवशयनी एकादशी से चातुर्मास शुरू हो जाने के चलते देवी देवता शयन में चले जाते हैं। धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक देवी देवताओं के शयन में चले जाने के बाद शादी विवाह के शुभ मुहूर्त नहीं रहते हैं। ऐसे में कार्तिक मास में आने वाली शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी कहा जाता है। उन्होंने कहा कि आषाढ़ शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवी देवता शयन करते हैं तथा कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन उठते हैं। देवउठनी एकादशी के बाद ही शादी विवाहए गृह प्रवेश सहित शुभ कार्य किए जा सकते हैं।

पंडितों के पास शुभ मुहूर्त की सभी तारीखें हुई बुक

शादी विवाह के शुभ मुहूर्त के दिनों में शहर के पंडितों की एडवांस में बुकिंग हो चुकी है। खरगोन के पंडित दीपक नाईक के अनुसार शादी विवाह के शुभ मुहूर्त वाले सभी दिनों की बुकिंग हो चुकी है। इसमें कई दिन दोपहर तथा रात की शादी के लिए भी बुकिंग हुई है। कई यजमानों के लिए दूसरे शहर से भी पंडितों का इंतजाम किया जा रहा है।

वैवाहिक समारोह बाजार से जुड़े लोगों की मानें तो शहर के प्रमुख मैरिज हालों, वेक्रेंट हाल, बैंडबाजा, कैटरर्स, टेंट, आतिशबाजी, लाइटिंग, डेकोरेटर्स, ब्यूटी पॉर्लर, हलवाई, बग्घी आदि की बुकिंग हो चुकी है। ऐसे में लोग अगले साल की लग्न को लेकर लोग ज्यादा उत्साहित हैं। जनवरी और फरवरी के लिए भी बुकिंग हो रही है।

वर्ष 2024 के अंतिम दो माह में 20 मुहूर्त

नवंबर में विवाह मुहूर्त

16
17
18
22 से 26 और 29

दिसंबर विवाह मुहूर्त

2 से 5,
10 ,11
13,14 से 16

वर्ग पहेली-7

बाएं से दाएं

1. अत्यधिक समर्थ, समृद्ध (5)
5. सुंदर दिखाई देने वाला, श्रीकृष्ण का चक्र (4)
6. कृषक, खेतिहर(3)
8. तल्लीन (3)
10. गंध (2)
11. चिनगारी, प्रकाश अथवा दीपक पर मंडराने वाले कीट (3)
12. परंतु, लेकिन, पंख (2)
13. रूई (3)
14. बधिर, जिसे सुनाई न दे (3)
15. अमानत (4)
16. विचार, प्रचलित बात (5)

ऊपर से नीचे

2. विस्ताचर से कहा जाना (3)
3. मलय, एक सुगंधित पदार्थ (3)
4. अशुभ, अभागा (4)
5. आग का बहुत धीमें जलना (5)
7. सूद या ब्याज का धंधा करने वाला, महाजन (4)
9. अपार, असीम (5)
10. सम्राट्, महाराजा (4)
12. बादल, समुद्र (4)
13. कथन (3)
14. अकसर, प्रायः (3)

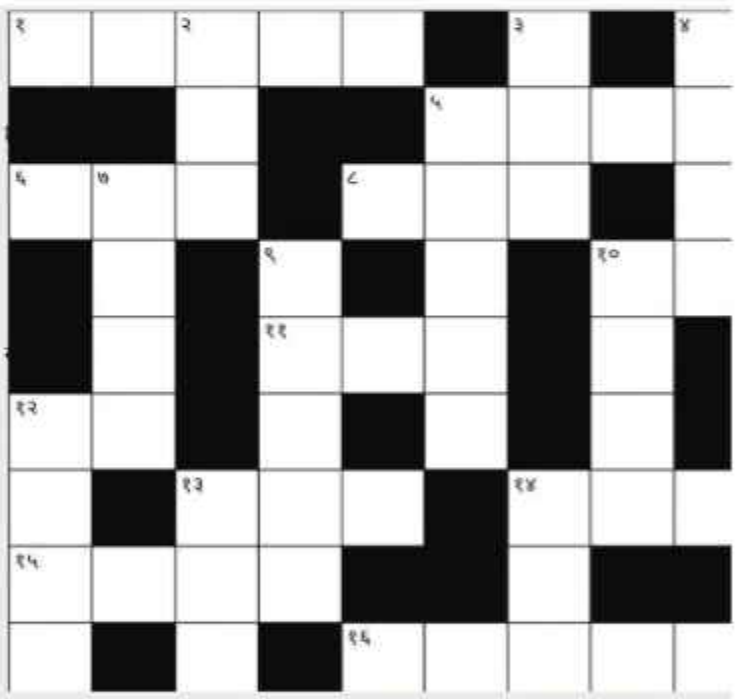

वर्ग पहेली 6 का सही उत्तर

अ	स	म	य	■	प	रा	भू	ता
भा	■	ध्	■	त्यो	री	■	■	न
ब	स्त्	■	धी	■	क्षा	र	ब्र	य
ग	■	क्ष	मा	प्रा	र्थी	■	प्	■
स्त	री	य	■	कृ	■	पो	ष	क
■	झ	■	प	त	बा	र	■	ल
अ	ना	द	र	■	स्त्	■	दे	ह
धि	■	■	व	क	■	गौ	■	का
क	ट	ह	ल	■	का	री	ग	री

सैंपल फेल होने पर व्यापारी न बनें पार्टी, कोर्ट में दर्ज कराएंगे विरोध : श्री कलंत्री

कृषि आदान विक्रेता संघ की संभागीय बैठक में व्यापारियों ने दिखाई एकजुटता

हलधर किसान

खरगोन. कृषि आदान विक्रेता संघ की संभाग स्तरीय बैठक नूतन नगर स्थित प्रदेश संगठन मंत्री विनोद जैन के कार्यालय पर आयोजित की गई। इसमें खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, धार जिले के डिस्ट्रीब्यूटर शामिल हुए। बैठक में कंपनियों, कृषि विभाग को लेकर व्यापारियों को आ रही समस्याओं, शिकायतों को लेकर विचार- विमर्श किया गया।

प्रदेश संगठन मंत्री श्री जैन ने कहा कि रबी सीजन में बीज और उर्वरक की कमी नहीं रहे और कृषकों को सही मूल्य और सही समय पर कृषि आदान उपलब्ध हो इसके लिए सभी को सकारात्मक प्रयास करने होंगे। वहीं खाद, फर्टिलाइजर, कॉटन व्यवसाय में आने वाली समस्याओं पर ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि व्यापारियों को सेंपल फेल होने पर लायसेंस निरस्ती की कार्रवाई पर रोक के लिए संगठन ने बड़ा निर्णय लिया है, आगामी 6 माह में इसके सकारात्मक परिणाम सामने आने वाले है। बैठक को राष्ट्रीय अध्यक्ष मनमोहन कलंत्री ने ऑनलाईन संबोधित करते हुए व्यापारियों को आश्वस्त किया कि सैंपल फेल होने पर अब व्यापारी का लायसेंस निरस्त नही होगा, इसके लिए शासन को 6 माह का समय दिया है, यदि ऐसा नही होता है तो कोर्ट जाने की तैयारी पूरी हो गई है। हम कोर्ट को आश्वस्त करेंगे कि सैंपल फेल होने पर व्यापारी को फर्स्ट पार्टी न बनाया जाएगा, इसके लिए संगठन की एकता जरुरी है। आगामी दिनो में ऑनलाईन सदस्यता अभियान चलेगा, इसके लिए एप्प लांच कि जाएगी, इसमें अधिक से अधिक व्यापारी जुड़कर संगठन को मजबुती दें, जिससे हमारी ताकत दिखे।

एडवांस बुकिंग के बहिष्कार का लिया निर्णय

बैठक में कॉटन कंपनियों के आगामी अप्रैल, मई माह में होने वाली बुकिंग इस वर्ष अक्टूबर में किए जाने की बात उठी, जिस पर सभी व्यापारियों ने एकमत होकर इसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। व्यापारियों ने कहा कि महाराष्ट्र के व्यापारियों ने एकमत होकर अक्टूबर में बुकिंग देने से इंकार किया है। प्रतिवर्षानुसार फरवरी, मार्च माह में ही बुकिंग देंगे, अक्टूबर में बुकिंग से आर्थिक नुकसान होगा, इसके लिए रिटेलर से लेकर डिस्ट्रीब्यूटर को भी भरोसे में लिया जाएगा। बैठक को ऑनलाईन संबोधित करते हुए प्रदेश संगठन मंत्री संजय रघुवंशी ने कहा कि कंपनी हमारी दुश्मन नही है, किसी भी समस्या या विरोध को सामंजस्य बनाकर रखें, क्योंकि व्यापारी और कंपनी दोनो को मिलकर काम करना है।

यह हुए शामिल

बैठक में जिलाध्यक्ष नरेंद्र सिंह चावला, सचिव अतुल शर्मा, राजेंद्र पाटीदार, पारस जैन कासलीवाल, अरविंद पाटीदार, खेमराज जैन, उत्तम पाटीदार, गुलाब भाई, सुनील चौहान, जितेंद्र टांके, दिनेश सोलंकी, देवेंद्र गुप्ता, अनोकचंद मंडलोई, इंदर भाई सोनकर, लोकेश यादव, राधेश्याम पाटीदार धामनोद,, विजय पाटीदार धामनोद, मुफ्फजल बोहरा खरगोन, हरिराम पटेल ऊन, मुर्तजा बोहरा, अमर भाई भीकनगांव, इंदरसिंह कसरावद, पन्नालाल पटेल बैडिया, रामभाई बैडिया, आशीष भंसाली खंडवा, राजेश पाटीदार बुरहानपुर, निलेश रोकडिया बड़वाह, मुर्तुजा इसाक अली पानसेमल आदि मौजूद थे।

एजेंसी देना है-

प्रतिष्ठित मासिक समाचार पत्र हलधर किसान/ इलेक्ट्रानिक प्लेटफार्म किसान प्लस टीवी पर कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध, अनुसंधान, नई तकनिक, योजनाओं के राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के समावेश के साथ नियमित रुप से प्रकाशित हो रहा है।

अगर आप भी कृषि पत्रकारिता में रूचि रखते है तो हमारे न्यूज चैनल सहित अखबार से जुड़ने के लिए हमारे वाट्सअप नंबर(88174 02860) या हमारे प्रधान कार्यालय 598, वेगॉस मॉल, कार्पोरेट बिल्डिंग, एस.14 द्वारका साउथ वेस्ट, नई दिल्ली 110075 या मप्र में 762, बीज भंडार भवन, न्यू नूतन नगर खरगोन में संपर्क कर सकते है।

शख्सियतः चुनौती भरे दौर में शुरु किया था व्यापार, आज 15 राज्यों में किसानों की पहली पसंद बना पंचगंगा सीड्स

हलधर किसान

(शख्सियत) श्रीकृष्ण दुबे.

.कहते हैं कि कुछ करने की दृढ़इच्छा शक्ति हो तो जिदगी में किसी भी मुकाम को हासिल किया जा सकता है। कुछ ऐसा ही मुकाम कड़े संघर्ष और मेहनत के बाद श्री प्रभाकर उत्तमरावजी शिंदे ने पाया है। श्री शिंदे ने प्रतिस्पर्धा के इस दौर में पंचगंगा ग्रुप किसी पहचान का मोहताज नही है। साधारण परिवार से ताल्लूक रखकर, श्री शिंदे आज कृषि आदान के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाकर न केवल माता-पिता और समाज को बल्कि राज्य को गौरवावित कर रहे है।

पंचगंगा सीड्स सब्जी बीज व्यापार में व्यापारियों, ग्राहकों की पहली पसंद है, इस भरोसे को कायम करने में क्या संघर्ष रहा, कैसे इतना बड़ा कारोबार स्थापित हुआ, इसको लेकर हमारे संवाददाता श्रीकृष्ण दुबे से चर्चा में श्री शिंदे ने बताया कि वह माता. पिता ने उन्हें सीख दी है कि किसी भी परिस्थिति में ईमानदारी और धैर्य मत छोड़ना। किसी भी क्षेत्र में मेहनत से किया गया प्रयास सफल जरुर होता है। एक साधरण कृषक किसान परिवार में जन्में श्री प्रभाकर शिंदे जी ने सन् 1994 में कृषि स्नातक की शिक्षा पूरी की। उस दौर में आसानी से शासकीय नौकरी मिल सकती थी, लेकिन कृषि की पढ़ाई करते हुए कृषि में इस कदर रुचि हुई कि उन्होंने किसानों के लिए कुछ करने का संकल्प लेकर बीज क्षेत्र को चुना।

किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराना प्राथकिता

किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध की प्राथमिकता का संकल्प लेकर 2003 में पंचगंगा सीड्स प्रा. लि. किस्थापना की। शुरुआत दौर में असंख्य चुनौतियां मुंह बाएं खड़ी थी, जैसे श्रमिक नही मिलना, माल की खपत कैसे करेंगे, क्योंकि उस दौर में भी स्थापित कंपनियां नए कारोबारी को आसानी से व्यापार नही करने देती थी, लेकिन किसानों कम कीमत में अधिक उत्पादन एवं गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराने की सोच ने उन्हें इन परेशानियों को पार पाने में बड़ी मदद की।

किसान ही बने ब्रांड एंबेसेडर

श्री शिंदे बताते हुए शुरुआती दौर में बीज किसानों तक पहुंचाने में परेशानी जरुर हुई, प्याज का बीज बाजार में लाना, आत्मघाती कदम माना जाता था, किसान पारम्परिक रूप से खुला /असंगठित तरिके से उत्पादित बिना गारंटी वाला सस्ता बीज उगाने के आदि थे। लेकिन उन्होंने रिसर्च के बाद बीज तैयार किया और जब किसानों ने पंचगंगा सीड्स के प्याज का उपयोग किया और उत्पादन देखा तो वे खुद कंपनी के ब्रांड एंबेसेडर के रुप में प्रचार करने लगे। किसानों के भरोसे ने कंपनी को महाराष्ट्र के गांव- फालियों तक पहुंचाया।

पंचगंगा सीड्स संचालक श्री प्रभाकर शिंदे युवाओं के लिए बने प्रेरणा

आज 15 राज्यों में है पंचगंगा बीज की पहुंच

किसी भी कंपनी के लिए महज दो दशक में एक राज्य से देश के 15 राज्यों तक कारोबार पहुंचाना आसान नही होता। हर राज्य में अलग- अलग नियम, अलग- अलग भौगोलिक एवं वातानुकुलित स्थिति होती है। इन सब को ध्यान में रखकर पंचगंगा सीड् ने ऐसे बीज तैयार किए है जो न केवल महाराष्ट्र बल्कि देश के 15 राज्यों में पहुंच रहे है। 19 किस्म की प्याज वैरायटी है, जो हर सीजन में डिमांडेबल रहती है।

इन किस्मों पर भी किसान जताते है भरोसा

प्याज बीज से शुरु हुई कंपनी आज किसानों और विक्रेताओं की मांग पर बैंगन, टमाटर, मिर्च, भिंडी, मका, बाजरी, सोयाबीन, तुवर,बीटीकपासआदि फसलोंमें 200 से ज्यादा किस्म विभिन्न प्रांतों के भिन्न-भिन्न सिग्मेंट कि आवश्यतानुसार उपलब्ध कि है। भारतभर के किसान औरविक्रेताओं का अनुभव है कि विगत 21 सालों से पंचगंगा सीड्स निरंतर उच्च गुणवत्ता कि किस्में और बीज बाजार में उपलब्ध करा रहे है।

18 लाख किसानों का परिवार है पंचगंगा

पंचगंगा सीड्स परिवार से 18 लाख किसान जुड़े है, जो प्रतिवर्ष कंपनी का बीज बुआई करते है। करीब 45000 बीजोत्पाद किसान बीजोत्पादन करते है जिसे 10000 से ज्यादा विक्रेता किसानों तक पहुंचाते है। कर्मठ और निष्ठावान 350 से ज्यादा कर्मचारी और कई हजार दिहाड़ी मजदूर विभिन्न गतिविधियों से जुड़े है। रुक जाते थक जाते ऐसे तो शिंदे साहब है नहीं। वर्ष 2020.21 कोरोना काल में जब देश में प्याज बीज की कमी आई थी, उस दौरान श्री शिंदे ने यह निर्णय लिया था, कि प्रत्येक किसान के हाथों में पंचगंगा कंपनी का बीज जाए और कमी न रहे, इसलिए उन्होंने घोषणा की थी कि एक किसान को 2 किलो बीज दिया जाए, ऐसा करके कोई भी किसान बीज से वंचित नहीं रहा और दो.दो किलो बीज पंचगंगा का देश के प्रत्येक किसान को प्राप्त हुआ।

नवंबर में गन्ना किसानों को देंगे शुगर मिल की सौगात

गन्ना उत्पादक किसानों को उपज के दाम को लेकर संघर्ष करते देख श्री शिंदे ने पंचगंगा शुगर एंड पावर प्रालि. महालगांव, तहसील वैजापुर जिला. संभाजीनगर में खुद की शुगर मिल स्थापित की है, जो नवंबर माह में शुरु होने जा रही है। जहां न केवल श्रमिकों को रोजगार मिलेगा, बल्कि किसानों को उनकी उपज का उचित दाम देने का प्रयास भी किया जाएगा। इस आधुनिक मिल में शुगर हॉउस, रिफाईनरी, कोजेनप्लांट, पारम्परिक भट्टी, भस्मीकरण यंत्र, डिस्टीलरी, अनाज आधारित डिस्टीलरी आदि संयंत्रों का समावेश है। इस कारखाने से शुद्ध शकर 4 लाख लिप्रतिदिन शकर का उत्पादन होगा। लगभग15 हजार गन्नाउत्पादक किसान पंचगंगा शुगर अण्ड पावर के साथ पंजीकृत किये जा हो चुके है इसके अलावा क़रीब एक हजार कर्मचारियों को रोजगार दिया जा रहा है।

अन्य समूह में किया कंपनी का विस्तार

पंचगंगा समूह का विस्तार पंचगंगा बायोटेक, गुडवर्ड पंचगंगा फार्मसालूशन और पंचगंगा मावेरिकलैब आदि के रूप में किया गया है। यह सभी व्यवसाय सफलतापूर्वक चलाये जा रहे है।

व्यापार के साथ समाजसेवा में भी दे रहे योगदान

संवाददाता श्री दुबे ने बताया श्री शिंदे न केवल व्यापार बल्कि समाजसेवा एवं राजनीतिक क्षेत्र में भी सक्रियता निभाते है। उनके महाराष्ट्र सीएम एकनाथ शिंदे सहित अन्य राजनीतिक दलों के जनप्रतिनिधियों, वरिष्ठ नेताओं से भी संबंध है। उनके सेवाकार्यों को देखते हुए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र अयोध्या में श्रीरामलालाजी के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भी आमंत्रित किया गया था।

युवाओं के लिए दिया संदेश

डर और असुरक्षा किसी भी व्यक्ति के सबसे बड़े शत्रु होते हैं। ये दोनों भावनाएं लोगों की उत्पादकता और खुशी दोनों पर ताला लगा देते हैं। अगर आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का अभाव है तो आप मुश्किल से ही अपनी जिंदगी में सफलता प्राप्त कर पाएंगे। इसलिए हमेशा सकारात्मक रहें और असफलताओं के बावजूद हमेशा अच्छी सोच रखें।

बीज की गुणवत्ता से नही किया समझौता

पिछले 21 वर्षों से बाजार में बीज उपलब्ध करा रहे पंचगंगा ग्रुप के संचालक श्री शिंदे का कहना है कि बाजार में इस समय कई कंपनियां प्रतिस्पर्धा के दौर में है। ऐसे में कई नामी कंपनियों ने बीज की गुणवत्ता से भी समझौता किया है, लेकिन पंचगंगा ने कभी अपने बीजों की गुणवत्ता से समझौता नही किया, यही कारण है कि किसानों की पहली पसंद और डीलरों का भरोसा पंचगंगा के बीज पर है।

धनतेरस पर मप्र के 81 लाख किसानों के खातें में हुई धनवर्षा

81 लाख किसानों को मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना की दूसरी किश्त में मिलें 1642 करोड़ रूपये

राष्ट्रीय मासिक समाचार पत्र
हलधर किसान

भोपाल। मप्र के किसानों के खाते में धनतेरस पर सरकार ने धनवर्षा की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंदसौर से मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में प्रदेश के 81 लाख किसानों के खातों में वर्तमान वित्तीय वर्ष की द्वितीय किश्त की 1624 करोड़ रुपयो की राशि सिंगल क्लिक से अंतरित की।

इसमें मन्दसौर जिले के 2 लाख 991 किसानों को 40 करोड़ 19 लाख 82 हजार रूपये मिले है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्थानीय कृषकों द्वारा स्वागत एवं सम्मान किया गया। मन्दसौर के किसान गोपाल राठौर एवं शंभू सिंह को मुख्यमंत्री ने किसान सम्मान निधि का चेक वितरित किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंदसौर, नीमच जिले औषधि की खेती के लिये जाने जाते है। आगामी समय में मंदसौर,नीमच में भी इंडस्ट्री कॉन्क्लेव कराई जाएगी। इससे क्षेत्र में यहां की आवश्यकताओं के अनुरूप उद्योगों को आकर्षित करने में मदद मिलेगी। इससे स्थानीय युवाओं को रोजगार भी उपलब्ध होगा। साथ ही औषधि, उद्योग को बढ़ावा मिलेगा।

समारोह में 'मन से मंदसौर' वेबसाइट लांन्च की गई। इस वेबसाइट से मंदसौर जिले का कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति जुड़कर आवश्यक सहायता प्राप्त कर सकता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कोरोना काल में अपने माता.पिता को खो चुके बच्चों से भेंट कर उन्हें पटाखे वितरित किये। मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य विभाग के फ्रंटलाईन वर्कर से मिलकर उपहार भेंट किये।उन्होंने मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों को वाईट कोर्ट भी पहनायें।

कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, उच्च शिक्षा तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री इंदर सिंह परमार, सांसद सुधीर गुप्ता, राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार सहित विधायक, जन.प्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक एवं किसान बन्धु उपस्थित थे।

इसी प्रकार धार जिले के 16 हजार 530 नवाधिकार पट्टाधारियों को 3 करोड़ 30 लाख 60 हजार रूपये की राशि का अंतरण किया गया। इनमें धरमपुरी तहसील के 865 किसानों को 17 लाख 30 हजार रूपये, सरदारपुर तहसील के 1126 किसानों को 22 लाख 52 हजार रूपये, तिरला तहसील के 2586 किसानों को 5110 लाख 72 हजार रूपये, बदनावर तहसील के 764 किसानों को 15 लाख 28 हजार रूपये, कुक्षी तहसील के 191 किसानों को 3 लाख 82 हजार रूपये, नालछा तहसील के 2110 किसानों को 42 लाख 20 हजार रूपये, मनावर तहसील के 674 किसानों को 13 लाख 48 हजार रूपये, गंधवानी तहसील के 4059 किसानों को 81 लाख 18 हजार रूपये, डही तहसील के 2186 किसानों को 43 लाख 72 हजार रूपये, बाग तहसील के 1916 किसानों को 38 लाख 32 हजार रूपये तथा निसरपुर तहसील के 53 किसानों को एक लाख 6 हजार रूपये की राशि की द्वितीय किस्त का अंतरण किया गया है।

धार जिले में कितने किसानों को मिला लाभ

मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना की वर्ष 2024.25 की द्वितीय किश्त धार जिले के 2 लाख 21 हजार 162 किसानों को 44 करोड़ 23 लाख 24 हजार रुपए की राशि का अंतरण हुआ। एसएलआर मुकेश मालवीय ने बताया कि मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत वर्ष में कुल 6 हजार रूपये की राशि तीन समान किश्तों में प्रदान की जाती है। डही तहसील के 14 हजार 439 किसानों को 2 करोड़ 88 लाख 78 हजार रूपये, कुक्षी तहसील के 29 हजार 981 किसानों को 5 करोड़ 99 लाख 62 हजार रूपये, सरदारपुर तहसील के 35 हजार 435 लाभान्वित किसानों को 7 करोड़ 8 लाख 70 हजार रूपये, धार तहसील के 26 हजार 247 किसानों को 5 करोड़ 24 लाख 94 हजार रूपये, धरमपुरी तहसील के 15 हजार 335 किसानों को 3 करोड़ 6 लाख 70 हजार रूपये, गंधवानी तहसील के 17 हजार 328 किसानों को 3 करोड़ 46 लाख 56 हजार रूपये, मनावर तहसील के 37 हजार 142 किसानों को 7 करोड़ 42 लाख 84 हजार रूपये, बदनावर तहसील के 28 हजार 184 किसानों को 5 करोड़ 63 लाख 68 हजार रूपये तथा पीथमपुर तहसील के 17 हजार 71 किसानों को 3 करोड़ 41 लाख 42 हजार रूपये की राशि अंतरण की गई है।

बीज भंडार
हमारे यहाँ पर सभी कम्पनियों के उच्च क्वालिटी के सब्जी बीज एक ही छत के नीचे उचित दाम पर मिले हैं!

ब्रांच: खरगोन/खंडवा /कुक्षी/ महू '/राजपुर/अंजड/धामनोद/इंदौर/जबलपुर/मंडलेश्वर/ मनावर/ कालापीपल /कसरावद पूंजापुरा/ छिंदवाडा बीज भंडार की फ्रेंचाईसी लेने के लिए संपर्क करे - 8305103633, 7879428271

रबी सीजन फसलों की बुआई से पहले जानें, कृषि मंत्रालय ने क्या दी है सलाह

हलधर किसान

नई दिल्ली। रबी सीजन में फसल बुआई की तैयारी कर रहे किसानों के लिए कृषि मंत्रालय ने सलाह जारी की है। मंत्रालय ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा और उत्तराखंड सहित 4 राज्यों के किसानों को रबी की बुवाई करने से पहले खास बातों पर ध्यान देने की अपील की है। कृषि मंत्रालय ने किसानों से अभी मटर, धनिया और मूली की अगेती किस्मों की बुवाई करने की सलाह दी है। मंत्रालय के मुताबिक, उत्तर प्रदेश के किसानों को बागवानी फसलों की बुवाई पर ज्यादा फोकस करना चाहिए। यूपी के किसान अभी मूली, मेथी और धनिया की बुवाई कर सकते हैं। इससे बंपर पैदावार मिलेगी।

साथ ही मंत्रालय ने एडवाइजरी में बुवाई करने से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार करने को कहा है। एडवाइजरी के मुताबिक, खेत में जल निकासी की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि बारिश होने पर खेत में जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो। इसके अलावा किसान खेत में ज्यादा से ज्यादा जैविक खाद का इस्तेमाल करें। वहीं, किसानों को ये भी सलाह दी गई है कि अगर उनके खेत में कपास, मक्का, सोयाबीन, मूंग और उड़द की फसल तैयार हो गई है, तो उसकी तुरंत कटाई कर लें। नहीं तो मौसम में बदलाव आने पर फसल को नुकसान भी हो सकता है।

फसल कटाई के बाद करें ये काम

मंत्रालय ने किसानों से तैयार फसल की कटाई करने के बाद खेतों को अच्छी तरह से सफाई करने की अपील की है, ताकि अगली फसल को बोया जा सके,साथ ही किसी भी फसल की बुवाई करने से पहले उन्नत किस्म के बीज को चुनने की सलाह दी है, ताकि अच्छी पैदावार हो।

हरियाणा के किसान करें ये काम

कृषि मंत्रालय ने अपनी एडवाइजरी में कहा है कि हरियाणा के किसान अगर अभी सरसों, मूली और पालक की बुवाई करते हैं, फसलों का विकास तेजी से होगा। इसके अलावा किसानों को धनिया की भी बुवाई करने की सलाह दी गई है। वहीं, प्रदेश के पूर्वी जिलों के किसानों को तैयार धान और मक्के की कटाई करने निर्देश दिए गए हैं। इसी तरह दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों के किसानों को भी गाजर, सरसों और मटर की बुवाई करने की सलाह दी गई है। इसी तरह उत्तर प्रदेश के किसान धनिया, मेथी और मूली की बुवाई कर सकते हैं। अगर किसान चाहें, तो मटर की अगेती किस्मों की भी बुवाई कर सकते हैं। वहीं, उत्तराखंड के किसानों को मक्का की कटाई करने की सलाह दी गई है। इसके बाद यहां के किसान हरे चारे की बुवाई कर सकते हैं। इसके अलावा उत्तराखंड के किसानों को सोयाबीन, उड़द और मूंग की तैयार फसल की तुरंत कटाई कर लेनी चाहिए। अगर उत्तराखंड के किसान चाहें, तो इन दिनों सरसों की बुवाई कर सकते हैं।

गेहूं बुआई से पहले घर पर करें बीजोपचार, नही लगेंगी कीट

नवंबर माह से बिहार, उत्तर प्रदेश, मप्र और हरियाणा सहित लगभग पूरे देश में गेहूं की बुआई शुरू होने वाली है। गेहूं की बुवाई करने से पहले किसान बीज का उपचार जरूर कर लें, ऐसा करने से बुवाई के बाद बीजों में दीमक, फफूंद और अन्य दूसरे कीट, रोगों के लगने की संभावना कम हो जाती है। फसल की पैदावार में भी बढ़ोतरी होगी। बड़ी बात ये है कि बीज का उपचार करने से खेती में लागत भी कम हो जाएगी। यानी एक छोटी सी मेहनत के बाद केवल फायदा ही फायदा।

विशेषज्ञो के अनुसार अंधाधुंध रसायनिक खाद और कीटनाशकों के इस्तेमाल से मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है, ऐसे में खेतों में फफूंद एवं बैक्टिरिया की मात्रा बढ़ रही है, जिसके चलते फसलों में तरह.तरह की बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। इन बीमारियों के चलते फसल का विकास रूक जाता है और उत्पादन में भी तेजी से गिरावट आ रही है। इन रोगों से बचने के लिए केवल बीज का उपचार करना ही एक कारगर तरीका है। इसलिए किसान गेहूं की बुवाई करने से पहले बीज का उपचार जरूर करें।

किस तरह करें बीच का उपचार

अगर आप जैविक विधि से बीज का उपचार करना चाहते हैं, तो सबसे पहले अच्छी किस्म के बीजों का चयन करें। इसके बाद ट्राइकोडर्मा 6 से 8 ग्राम प्रति किलो की दर से मिलाकर बीजों का शोधन कर सकते हैं। ट्राइकोडर्मा से बीज उपचारित करने से बीज जनित और भूमि जनित रोगों से फसल को बचाया जा सकता है।बीज उपचारित करके बुआई करने से जमाव बेहतर होता है। पौधे शुरुआत से ही स्वस्थ होते हैं। किसानों को कम लागत में अच्छा उत्पादन मिलता है। वहीं, रासायनिक विधि से बीजों का उपचार करने में कारबेंडर जिम दवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। खास बात यह है कि कारबेंडर जिम दवा का इस्तेमाल दो ग्राम प्रति किलो बीज की दर से ही करें। कारबेंडर जिम दवा के इस्तेमाल से फसल में फफूंद का हमला नहीं होता है। इसके अलावा दीमक लगने से बचाने के लिए आप बीज को क्लोरीपायरीफोस दवाई का भी बीज शोधन में उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा 2 से 2.5 ग्राम कैप्टान या थीरम नाम का रसायन 1 किलो बीज उपचारित करने के लिए पर्याप्त होता है, 2 से 2.5 ग्राम बावस्टीन का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। 40 किलोग्राम बीज उपचारित करने के लिए 100 ग्राम कैप्टान या बावस्टीन की जरूरत होती है। बीज उपचारित करने के लिए गेहूं के बीज को छायादार स्थान पर फर्श पर बिछाएं, बीज पर पानी का छिड़काव करें और रसायन को बीज के ऊपर बिखेर दें। अच्छी तरह से हाथ से पूरे बीज को मिला दें। इसके बाद गेहूं की फसल की बुवाई की जा सकती है।

ये हैं गेहूं की उन्नत किस्में

वैज्ञानिकों के मुताबिक, 15 नवंबर से गेहूं की बुवाई करना ज्यादा अच्छा रहेगा। किसान गेहूं की उन्नत किस्मों का ही हमेशा बुवाई करे। एचडी.2967, एचडी.3086, डीबीडब्ल्यू.88, डब्ल्यूएच.1105 और डब्ल्यूएच.711 प्रचलित है। वैज्ञानिकों का कहना है कि बिजाई से पहले बीज का उपचार करना बहुत जरूरी है। यह बीजों में कीड़ों और बीमारी की रोकथाम के लिए रामबाण दवाई है।

जैविक खाद इस्तेमाल करते समय बरते सावधानी, नही तो घट सकता है उत्पादन

आज के समय में किसान फसल में ज्यादा उत्पादन के लिए अंधाधुन रासायनिक खाद का इस्तेमाल कर रहे हैं। किसान रासायनिक खाद से मुक्ति पाने के बजाए इसका इस्तेमाल सबसे ज्यादा कर रहे हैं। इससे खेतों में कई समस्या बढ़ रही है। इसका असर लोगों के सेहत पर भी पड़ रहा है। आज के समय में सरकार की किसानों को जैविक खाद के प्रयोग करने के लिए अपील कर रही है। तो आइए इस रिपोर्ट में जानते है रासायनिक खाद के बजाए जैविक खाद के इस्तेमाल फायदे...

वर्तमान में किसान खरीफसीजन में धान, मक्का, सोयाबीन, कपास की खेती सबसे अधिक करते है। हर प्रदेश, जिले की जमीन ऊंची - नीची है। जहां की उर्वरक मिट्टी रैन ऑफ होने से बह जाती है। जिसके कारण खेतो की उर्वरा शक्ति छीन जाती है। ऐसे में किसानों को खास ध्यान देने की जरूरत है। कृषि वैज्ञानिक के अनुसार किसान मिट्टी की उर्वरता और फसल में उत्पादन के लिए रासायनिक खाद का इस्तेमाल करते हैं।

जैविक खाद के इस्तेमाल से पहले इन बातों का रखें ध्यान

अगर किसान इस खरीफ सीजन में रासायनिक खाद के बजाय जैविक खाद का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो खेतों में 3 साल तक जैविक खाद और कीटनाशक का प्रयोग करना जरूरी है। अगर सीधा रासायनिक खाद को छोड़कर जैविक खाद का इस्तेमाल करें, तो फसल उत्पादन में भारी कमी आयेगी। इसीलिए किसानों को सबसे पहले तीन सालों तक जैविक खाद का इस्तेमाल करें। इसके साथ इन बातों का भी ध्यान दें की किसी प्रकार की कैमिकल खेतों तक न पहुंचे। जिन खेतों में रासायनिक खाद का इस्तेमाल हो रहा है, उसमें धीरे.धीरे रासायनिक खाद की मात्रा कम करते हुए जैविक खाद के मात्रा का इस्तेमाल करें। मिट्टी की उर्वरा शक्ति और जल धारण करने की क्षमता बढ़ाने के लिए जैविक खाद के रूप में गोबर खाद, केचुआ निर्मित खाद, नाडेप कम्पोस्ट, नीलहरित शैवाल, हरा खाद, बायोगैस स्लरी, पशुओं के नीचे का बिछावन, सूअर और भेड़.बकरियों की खाद, बर्मी कंपोस्ट का इस्तेमाल करें।

जमीन के 6 इंच नीचे एक हार्ड पैन परत बन जाता

रासायनिक खाद के इस्तेमाल से उत्पादन में बढ़ोतरी तो होती हीं है। मगर ये कई रूप से नुकसान पहुंचाता है। इसके इस्तेमाल से जमीन की जल धारण करने की क्षमता छीन जाती है।जमीन के 6 इंच नीचे एक हार्ड पैन परत बन जाता है। जिससे फसल के जड़ों का विकास नहीं हो पाता है। इसके अलावा तैयार फसल में वो स्वाद नहीं मिल पाता है। रासायनिक खाद के प्रयोग से उपज अनाज और फल सब्जियां सेवन करने से कई बीमारी होने लगती है।

फसल और सेहत दोनों के लिए लाभकारी

जैविक खाद जिसे जीवाणुओं की क्रिया से निर्मित खाद कहा जाता है। ये सेहत के लिए काफी लाभदायक है। जैविक खाद के इस्तेमाल से जमीन में जल धारण करने की क्षमता बढ़ती है। जमीन के 6 इंच नीचे हार्ड पैन नहीं बनते है। जिससे फसल की जड़ों का विकास होता है और फसल भी अच्छा उत्पादन होता है। जैविक खाद के इस्तेमाल से फसल में स्वाद आता है। ये सेहत के लिए भी लाभदायक होता है। इससे खेतों के गुणवत्ता में भी विकास होता है।

बीज विक्रय लाइसेंस एक छलावा...

बीज कानून रत्न, सेवानिवृत्त एरिया मैनेजर आर.बी. सिंह का व्यापारियों के लिए कानूनी ज्ञान

हलधर किसान

इंदौर। सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान) के बतौर एरिया मैनेजर पद से सेवानिवृत्त हुए बीज कानून रत्न से स मानित श्री आर.बी. सिंह अपने कार्यकाल के दौरान बीज व्यापार को लेकर संग्रहित किए गए ज्ञान को किताबों, कार्यशाला, प्रशिक्षण शिविरो के माध्यम से देशभर में पहुंचा रहे है। हरियाणा हिसार निवासी श्री सिंह ने अब तक करीब 4 पुस्तकें लिखी है, जिसमें उन्होंने बीज व्यापार में आने वाली समस्याओं, लाइसेंस प्रक्रिया, बीज गुणवत्ता आदि की बारीकि से जानकारी प्रकाशित की है। हलधर किसान से भी उन्होंने बीज लाइसेंस को लेकर

विभागीय आवेदन प्रक्रिया से लेकर लाइसेंस में बरती जाने वाली सावधानी सहित विभागीय विसंगतियों को उजागर करते हुए अन्य प्रक्रिया की बिंदूवार जानकारी साझा की है,

श्री सिंह का कहना है कि बीज कृषि उत्पादन का श्रेष्ठ आदान है इसलिए बीज की गुणवत्ता उत्तम ही नहीं अति उत्तम होनी चाहिए। बीज गुणवत्ता के लिए बीज अधिनियम, बीज नियन्त्रण आदेश में बीज निरीक्षक/बीज लाइसैंस प्राधिकारी को अपार शक्तियां प्रदान की हुई है। बीज विक्रय करने हेतु लाइसेंस लेना अति आवश्यक है। बीज विक्रय लाइसैंस प्राप्त करने के लिए प्रथम बार फार्म-ए में प्रार्थना पत्र लाइसेंसिंग प्राधिकारी को दिया जाता है और वह प्राधिकारी पूर्णरूप से सन्तुष्ट होने पर फार्म -ठ में लाइसैंस स्वीकृत करता है और फिर प्रत्येक 5 साल बाद लाइसैंस फार्म -ब में नवीनीकृत करवाया जाता है।

मुझे पंजाब सरकार द्वारा हरियाणा की एक बीज उत्पादक क पनी को प्रदान लाइसेंस प्राप्त हुआ और पढ़कर लगा कि बीज उत्पादकों के लिए यह लाइसेंस नहीं मात्र छलावा है।

1. लाइसैंसिंग अथॉरिटी:-

पंजाब राज्य की अधिसूचना दिनांक 27.07.1984 के अनुसार केवल मु य कृषि अधिकारी ही लाइसैंसिंग अथॉर्टी है परन्तु हरियाणा की बीज क पनी को संयुक्त निदेशक (कृषि) मोहाली पंजाब ने लाइसैंस जारी किया गया। यह लाइसैंस अविधिक है। अनुभव किया है कि पंजाब में फूटकर बीज विक्रेताओं को मु य कृषि अधिकारी लाइसैंस जारी करता है और बीज उत्पादक क पनियों को संयुक्त संचालक कृषि, मोहाली लाइसेंस जारी करता है। लाइसैंस केवल अधिसूचित अधिकारी ही जारी कर सकता है। हरियाणा में प्रत्येक जनपद में उप-निदेशक (कृषि) लाइसैंसिंग प्राधिकारी है। अतः सभी लाइसैंस उप-निदेशक (कृषि) ही जारी करता है।

2. दूसरे राज्य में लाइसैंस:-

बीज विक्रय एक राज्य की सीमाओं तक सीमित नहीं रखा जा सकता। दूसरे राज्य के कृषि अधिकारी उनके यहां लाइसैंस लेकर बीज विक्रय को बाध्य करते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है बल्कि एक राज्य का बीज उत्पादक दूसरे राज्य में अपना दफ्तर नहीं खोलता या गोदाम नहीं रखता और अपने बीज उस राज्य के मंजूरशुदा विक्रेताओं के माध्यम से बेचता है तो उसे उस राज्य में लाइसैंस लेने की आवश्यकता नहीं है। यह बात उप-आयुक्त (कोटी नियन्त्रण) भारत सरकार कृषि मन्त्रालय ने अपने पत्र दिनांक 29.04.2016 को स्पष्ट करते हुए सभी राज्य के निदेशकों को पत्र भेजे थे। उन्होंने इस पत्र का विरोध भी नहीं किया और तब भी पंजाब एवं अन्य प्रान्तों में वहां का लाइसैंस लेने के लिए बाध्य किया जाता है। हरियाणा, हिमाचल प्रदेश में उत्पादकों, विक्रेताओं का इन राज्यों में बीज विक्रय के लिए बाहरी राज्यों के विक्रेताओं को लाइसैंस लेने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है।

3. फार्म-बी की भाषा:-

बीज विक्रय लाइसैंस फार्म -बी में प्रदान किया जाता है, जिसकी भाषा

नि न प्रकार है:-

" subject to the provision of seed control order 1983 & the termes & conditions of the licence, m/s shri.....is hereby granted liecence to sell export, import and storage of said purpose of seed"

उपरोक्त भाषा के आधार पर प्रार्थी बीज विक्रेता को बीज बेचने,

आयात करने, निर्यात करने तथा भण्डारण करने के लिये लाइसैंस प्रदान किया जाता है अर्थात् इस लाइसैंस के आधार पर प्रार्थी विदेश -अमेरिका, श्रीलंका, रूस, जापान को बीज निर्यात कर सकता है, परन्तु विधि की विड बना देखिये कि हरियाणा राज्य का लाइसैंस प्राप्त बीज उत्पादक पंजाब में बीज विक्रय के लिए अलग से लाइसैंस लेने के लिए बाध्य किया जाता है।

4. विक्रय के लिए फसल/किस्में:-

हरियाणा के बीज उत्पादक को जारी लाइसैंस इस कारण भी अविधिक है। क्योंकि फार्म -बी में विक्रय की फसलें एवं किस्में अंकित हैं। वास्तव में फार्म -ए जो प्रार्थना-पत्र दिया जाता है उसके पांचवें बिन्दु में केवल फसलों के नाम होना जरूरी है किस्मों का नही, लेकिन कृषि अधिकारी किस्मों के नाम भी प्रार्थना-पत्र में अंकित करने के लिए बाध्य करते हैं।

उच्च न्यायालय अमरावती, आन्ध्रप्रदेश ने निर्णय देते हुए किस्मों का उल्लेख फार्म-ए के पांचवें बिन्दु में करना आवश्यक नहीं बताया। पंजाब सरकार द्वारा जारी फार्म-बी में फसल/किस्मों को अंकित किया गया है, न्यायालय में चुनौतीपूर्ण है। हर राज्य अपने हिसाब से फार्म -बी में बदलाव नहीं ला सकती।

5. फार्म-बी (लाइसैंस) में किस्में:-

पंजाब सरकार द्वारा जारी लाइसैंस में बिकने वाली किस्मों का उल्लेख है कि बीज नियन्त्रण आदेश-1983 के अनुसार पंजाब राज्य में उगाई जाने वाली किस्में। बीज नियन्त्रण आदेश-1983 में पंजाब राज्य में उगाई जाने वाली किस्मों का कहीं उल्लेख नहीं है। बीज नियन्त्रण आदेश द्वारा बीज निरीक्षक का प्रभाव अधिसूचित एवं गैर अधिसूचित किस्मों पर है, इस प्रकार सभी किस्में पंजाब में उगाई जा सकती है।

6. बीज आयात निर्यात:-

यह लाइसैंस इसलिए भी अमान्य है कि फार्म -बी में बिना भारत सरकार की अनुमति के बदलाव किया गया है उसमें किस्में भी लिखी गई हैं जो नहीं होनी चाहिए। इसके अलावा पंजाब सरकार ने फार्म-ठ की भाषा से बड़ी चतुराई से आयात-निर्यात शब्द हटा दिए। इस लाइसैंस में नीचे दी गई शर्तों को हू-ब-हू रखा गया है और शर्तों के बिन्दू 5 में स्पष्ट लिखा है डीलर समय-समय पर अपने कार्य स्थल के बदलाव तथा आयात-निर्यात की सूचनाएं देगा यानि गुड़ खाना गुड़यानी से परहेज। उपरोक्त लाइसैंस अविधिक है

एक शायर कहते है कि -

झूठ बोलने वाला और झूठ सुनने वाले सहमत हों तो वह अपराध नहीं होता,

यहाँ भी ऐसा ही है इस प्रकार केलाइसैंस को जारी करने वाला और प्राप्त करने वाला दोनों सन्तुष्ट हैं तो यह लाइसेंस सही है परन्तु यह गैर कानूनी है।

:: लोकोक्ति ::

अद्भुत है बीज का अंकुरण
स्वयं को होम कर, करता नया सृजन।

- सौजन्य से- श्री संजय रघुवंशी, प्रदेश संगठन मंत्री, कृषि आदान विक्रेता संघ मप्र
- श्री कृष्णा दुबे, जागरुक कृषि आदान विक्रेता संघ इंदौर

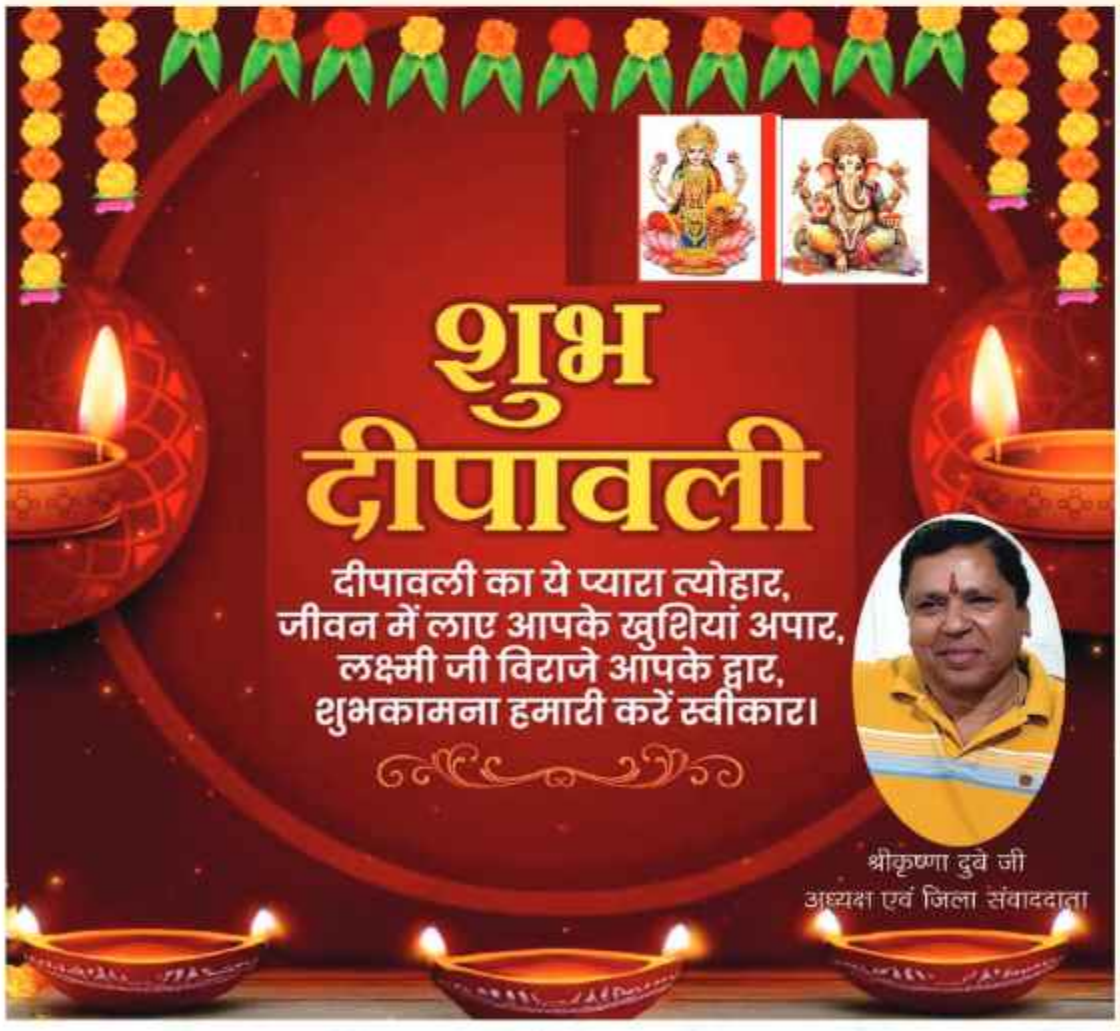

जागरुक कृषि आदान विक्रेता संघ इंदौर, हलधर किसान एवं किसान प्लसटीवी

स्वामी विवेक जैन, प्रकाशक विवेक जैन, मुद्रक कैलाश महाजन द्वारा गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, तिलक पथ, खरगोन से मुद्रित एवं 26/1, विवेकानंद कॉलोनी, वार्ड नंबर 5, खरगोन से प्रकाशित, संपादक विवेक जैन। RNI No. MPHIN/2022/85285, मोबा. नं. 98262 25025, 94254 89337 (समस्त प्रकार के विवादों के लिए न्याय क्षेत्र खरगोन रहेगा)।